वृत्तपत्राचे नांव :- हिन्दी मिलाप
वृत्तपत्र प्रकाशन ठिकाण :- हैदराबाद
वृत्तपत्र पान नं.:- 7
दिनांक :- 24-08-2007
कटिंग नंबर: .....

भारतीयों की चेतना में परम्परा से ज्ञान है

- महर्षि महेश योगी

सारी सृष्टि का संचालक वेद है। ऋग्वेद, अथर्ववेद, सामवेद, यजुर्वेद इसका विस्तार हैं। सारे वेदांग इसी का विस्तार हैं। ये सब आत्मचेतना को जागृत करने के लिए ही हैं। इसलिए भारत के वेद-वेदांग के, वेदांत के, कर्म के, धर्म के जो सिद्धान्त हैं, वे हरेक की आत्मा में, चेतना में जागृत होने चाहिए। आत्मचेतना की जागृति आवश्यक है। वेद आत्मा का ही स्वरित रूप है। स्वर व्यंजित हुआ, शब्द बना, वाक्य बना, पदार्थ बना और पूरा भौतिक जगत बन गया। इसलिए कहते हैं सारी विश्व चेतना, सारा विश्व वेद का ही पसारा है। इसलिए प्रत्येक क्षेत्र की व्यवस्था वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार ही चलनी चाहिए। क्योंकि वेद ही भारत का मूल ज्ञान हैं।

भारत का वैदिक सिद्धान्त अंग्रेजों की गुलामी में धुमिल हो गया। कई भारतीय प्रशासकीय और सामाजिक स्तर पर आज भी अंग्रेज़ों और अंग्रेज़ियत की गुलामी कर रहे हैं। पश्चिमी देशों की नीतियों को अपना रहे हैं। कई लोग आज अर्थ के लिए, पैसे के लिए अपने धर्म-मूल्य विदेशियों को बेच रहे हैं। अर्थ धर्मविहीन हो रहा है। आज धर्म की, शिक्षा की, स्वास्थ्य की, कृषि की, राजनीति की, प्रशासन की, सुरक्षा की, व्यवसाय की जितनी भी संस्थाएं हैं, सब गलत सिद्धान्तों पर चल रही हैं। इसको कहते हैं - कुएं में भांग पड़ी है। कोई कैसे ठीक होगा, सफल होगा। अगर मूल में वेद नहीं होगा तो सफलता कैसे मिलेगी। सभी नीतियों, सभी योजनाओं में, सभी संस्थाओं के मूल में वेद होना चाहिए। अब भी चेत जाना चाहिए। क्योंकि कहते हैं, जब से चेते तब से सही। अब तो सारे विश्व में भारतीय वेद-विज्ञान की आधुनिक शोधों द्वारा वैज्ञानिक रूप में पुष्टि हो रही है।

वे हेयम् दुःखम् अनागतम् के ही सिद्धान्त हैं। ये सभी वेद स्वरूप हैं। प्रत्येक को अपने, अपने परिवार और सारे समाज, सारे देश, सारे विश्व की सुख, शांति और समृद्धि के लिए इस अनमोल परम्परा को अपनाये रखना चाहिए।

आत्मज्ञान न होने के कारण ही कोई भी हर क्षेत्र में अज्ञानता का परिचय देता है। आत्मज्ञान कब नहीं होता, जब अपनी वैदिक संस्कृति से विमुख हो जाते हैं। भारत की वेद-विद्या आत्मज्ञान कराती है। जब इस वैदिकता में रहते हैं, आत्मज्ञान हो जाता है तो सर्वज्ञता आती है, सर्वसमर्थता आती है। इसलिए यह आवश्यक है कि भारतीय अपनी वैदिक संस्कृति में रहें। अपनी वैदिक संस्कृति के आधार पर ही भारत सारे विश्व-परिवार को मार्ग दिखा सकता है। भारतीयों की चेतना में, सनातन रूप में परम्परा से वैदिक ज्ञान भरा पड़ा है। ज्ञान का बीज तो आज भी हमारे पास है। क्योंकि अपनी भारतीय वेद-विद्या सनातन है। अपने यहां भारत के गांव-गांव में जो अपने इष्ट की आराधना, त्रिकाल संध्यावंदन, पूजा-अर्चना, भक्ति कीर्तन, वंदना के सिद्धान्त हैं, देवी-देवताओं की शक्ति जागृत कर उनकी अनुकम्पा बनाये रखने के जो विधान हैं, वे हेयम् दुःखम् अनागतम् के ही सिद्धान्त हैं। ये सभी वेद स्वरूप हैं। प्रत्येक को अपने, अपने परिवार और सारे समाज, सारे देश, सारे विश्व की सुख, शांति और समृद्धि के लिए इस अनमोल परम्परा को अपनाये रखना चाहिए।